Roll No. : .....

Total No. of Questions : **11**] [Total No. of Printed Pages : **4**

BEED–246

B.A. B.Ed. (IInd Year) Examination, 2023

SANSKRIT

Paper - II (CC-I)

(वैदिक साहित्य, गद्य साहित्य एवं व्याकरण)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 6 × 5 = 30)**

नोट :– सभी **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **6** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 10 × 3 = 30)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **10** अंक का है।

खण्ड–अ

1. समस्त **दश**प्रश्नानाम् उत्तरं ददत–

   (i) किस देवता का आयुध व्रज है ?

   (ii) तीन प्रकार के ताप कौन-कौनसे हैं ?

   (iii) ईशावाज्योपनिषद का वर्ण्य-विषय क्या है ?

(iv) ईशावाज्योपनिषद किस वेद के किस अध्याय से लिया है ?

(v) इन्द्रजाल के सम्मोहन से कौन विश्व को मोहित करती है ?

(vi) वैदिक साहित्य को कितने भागों में बाँटा गया है ?

(vii) यज्ञों का सम्बन्ध किस वेद से है ?

(viii) तारापीड कहाँ के राजा थे ?

(ix) शुकनास कौन था ? उसके अनुसार राजा को किससे बचना चाहिए ?

(x) 'साधकतम् करण' में विभक्ति का कारण बताइए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखितानाम् समस्त **पञ्च**प्रश्नानाम् उत्तरं ददत्–

2. निम्नलिखित**द्वय**मन्त्रान् व्याख्यायन्तु (सप्रसंगेन व्याख्यायन्तु)–

(क) अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिदर्वेहुतिभिः।
इमं स्तोमं जुषस्व नः॥

(ख) परा मे यन्ति धीतयोः गवो न गव्यूतिरनु।
इच्छन्तीरुरुचक्षसम्।

(ग) य आत्मदा बलदा यस्य विश्वे उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मैदेवाय हविषा विधेम॥

(घ) यं क्रन्दसी संयती विध्वयेते परेऽवरे उभया आमित्राः।
समानं चिद्रथमातास्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः।

3. निम्नश्लोकानाम् सप्रसंगेन व्याख्यां कुरुत (कश्चित् **द्वयोः**)–

(क) ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यात्किञ्चत जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

(ख) कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

(ग) असूर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽवृताः।
तांस्ते प्रेत्याभि गच्छन्ति ये के चात्यहनो जनाः॥

(घ) विद्या चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विधयाऽमृतमश्नुते॥

4. निम्नगद्यावतरणेषु **द्वयोः** सप्रसंगेन व्याख्यां कुर्यात–

(क) अप्रत्यय बहुला च दिवसान्तकमलामिव समुपचितमूलदंडकोषमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम्। लतेव विटपकान् अध्यारहिति गंगेव वसुजनन्यपि तरंग बुद्बुद्चंचला। दिवसकरगतिरिव प्रकटिटविविध संक्रान्ति। पातालगुहरेव तमो बहुलाहिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया। प्रावृडिवाचिरधर द्युतिकारिणी।

(ख) अयमेव चा ना स्वादितविषयरसस्य ते काल उपदेशस्य। कुसुम शर प्रहार जर्जरितेह हृदये जलमिव गलत्युपदिष्टम्। अकारण च भवति दुष्प्रकृतेरन्वयः श्रुतं वन विनयस्य। चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः। किंवा प्रशमहेतु नापि स प्रचंडतरी भवति वडवानलो वारिधारा।

(ग) कमलिनी सञ्चरण व्यक्तिकरलग्न नलिनी नाल कण्टक-क्षतेव न चिदपि निर्भरमाबद्धनाति पदम्। अति प्रयत्नविधृताऽपि परमेश्वर गृहेषु विविध गन्धगजगण्ड मधुपानमत्तेव परिस्खलति। पारुष्यमिवोपशिक्षितुमेसिधारा सु निवसति। विश्वरूपमिव ग्रहीतु माश्रिता नारायणम्मूर्तिम्।

(घ) यथा यथा चेयं चपला संवर्धन वारिधारा तृष्णाविषवल्ला नाम। व्याधगीतिरिन्द्रिय मृगाणाम्। परामर्श धूमलेखासाच्चरित चित्राणाम् विभ्रमशय्या योह दीर्घनिद्राणाम् निवास जीर्ण वलभी धनमदपिशाचिकानाम् तिमिरोद्गतिः शास्त्र दृष्टीनाम् पुरः पताका सर्वाविनयानाम्।

5. शुकनासोपदेश के आधार पर शुकनास का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

शुकनासोपदेश के आधार पर बाणभट्ट की भाषा-शैली की विवेचना कीजिए।

6. 'अग्निसूक्त' के मंत्रों की विवेचना कीजिए।

अथवा

उपनिषद शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी विषय-वस्तु समझाइए।

खण्ड–स

नोट :– कतिपयानाम् **त्रयाणा** प्रश्नानाम् उत्तरं ददतु–

7. निम्न वाक्यानां वाच्यपरिवर्तनम् कुरु–

(i) अहम् पुस्तकम् पठामि।

(ii) त्वम् गृहम् गच्छसि।

(iii) वानरः फलं खादति।

(iv) कः बालकम् रक्षति ?

(v) माता भोजनं पचति।

8. निम्नलिखितानां वाक्शशुद्धिं कुरु–

(i) त्वम् किमर्थं रोदति ?

(ii) रामाय सह सीता अपि अगच्छत्।

(iii) ते पुस्तकानि पठेत्।

(iv) वयम् ईश्वराय प्रणमामि।

(v) वृक्षेण पत्रं पतति।

9. निम्नपदानां सूत्रोल्लेखं कृत्वां विग्रहं कुरु–

(i) प्रतिदिनं

(ii) भूतबलिः

(iii) राजपुत्रः

(iv) ग्रामगतः

(v) षडाननः

(vi) चन्द्रशेखरः

10. निम्न सूत्राणाम् व्याख्यां कुरुत्–

(i) पञ्चमी भयेन

(ii) कुगति प्रादय

(iii) संख्यापूर्वो द्विगुः

(iv) दिक्संख्ये संज्ञायाम्

(v) साधकतमं करणम्

(vi) येनाङ्गविकारः

11. निम्न पदानां वाक्येषु सूत्रोल्लेख कृत्वा सिद्धिं कुरु–

(i) अभिनिविशते

(ii) हरये नमः

(iii) पादेन खञ्जः

(iv) ग्रामम् परितः क्षेत्राणि सन्ति

(v) शतं धारयति

(vi) भयात् त्रायते